फ्लोरोसिस - एक समस्या

फ्लोरोसिस की समस्या एक विश्वव्यापी समस्या है। अरजेन्टीना, अमेरिका, मोरक्को, अल्जीरिया, लीबिया, मिस्र, जॉर्डन, सीरिया, इराक, ईरान, पाकिस्तान, कीनिया, तन्जानिया, चीन, ऑस्ट्रेलिया, नयूजीलैण्ड, जापान तथा थाईलैण्ड मुख्य रुप से इस समस्या से प्रभावित हैं। आज भारत में भी यह समस्या एक गम्भीर रुप ले चुकी है। हमारे देश के लाखों लोग इसका शिकार हो चुके हैं। इसका मुख्य कारण है पेय जल में फ्लोराइड की अधिक मात्रा होना। भारत में सबसे पहले फ्लोरोसिस का पता एच0ई0 शोर्ट तथा अन्य द्वारा 1937 में किया गया। उस समय देश के चार राज्य आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, पंजाब तथा उत्तर प्रदेश इस समस्या से ग्रसित थे। 1960-1986 के दौरान नौ तथा 1990-92 के दौरान दो अन्य राज्य इस समस्या से जुड़ गये। इस प्रकार कुल मिलाकर 15 राज्य इस समस्या की चपेट में हैं जिनमें उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, आन्ध्र प्रदेश एवं तमिलनाडु का नाम गम्भीर रुप से ग्रसित राज्यों में है।

मानव शरीर में उपस्थित फ्लोराइड का 96 प्रतिशत भाग शरीर की हड्डियों तथा दातों में पाया जाता है। फ्लोराइड हड्डियों तथा दातों के निर्माण के लिये अतिआवश्यक है। मानव शरीर में फ्लोराइड की पूर्ति के मुख्य स्रोत पेयजल तथा भोजन है। यदि पेयजल में फलोराईड की मात्रा 0.8 से 1.0 मिग्रा/लिटर है तो यह विशेषकर 8 वर्ष से कम आयु के बच्चों के दातों के निर्माण के लिए अतिलाभप्रद है। परन्तु यदि इसकी मात्रा 1.5 मिग्रा/लिटर से अधिक हो तो यह "डेन्टल फ्लोरोसिस" तथा यदि 3.0 मिग्रा/लिटर से अधिक है तो "स्केलेटल फ्लोरोसिस" की समस्या उत्पन्न करता है। इस प्रकार यदि फ्लोराइड की मात्रा पेयजल निर्धारित सीमा से कम है तो यह दातों में कीड़े जैसी समस्या उत्पन्न करता है और यदि अधिक है तो यह "डेन्टल फ्लोरोसिस" तथा "स्केलेटल फ्लोरोसिस" की समस्या को जन्म देता है जिसके कारण दातों के आकार तथा हड्डियों के आकार मे विकृति आ जाती है। इसलिये फ्लोराइड एक "दुधारी तलवार" के समान है।

भारत के लगभग छः लाख गाँवों के पचास प्रतिशत भागों के पेयजल में फ्लोराइड की मात्रा 1.0 मिग्रा से अधिक है। एक सर्वेक्षण के अनुसार 8700 गॉवों के ढाई करोड़ लोगों द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले पेयजल में फ्लोराइड की मात्रा 1.5 मिग्रा/लिटर से अधिक है।

मुकेश कुमार शर्मा, व. शो. सहा.